डॉ विभूति भूषण
सहायक प्राध्यापक (अतिथि)

SNSRKS, कॉलेज साहिबगंज

अशोक के धर्म का प्रचार

अशोक ने इसके प्रचार के लिए अनेक महत्वपूर्ण उपाय किए. सातवें स्तंभ अभिलेख द्वारा अशोक ने इसके प्रचार के लिए जो कार्य किए हैं उनकी जानकारी मिलती है. इस अभिलेख द्वारा उसने घोषणाएं करवाएं. स्तंभों का निर्माण करवाया तथा महामात्रों की नियुक्ति की. उसने यात्रा भी की तथा विदेशों में प्रचारकों को भेजा उसके इन कार्यों से इसकी अत्यधिक प्रगति हुई.

धम्म से संबंध घोषणाएं पत्थर के टुकड़ों और स्तंभों पर लिपिबद्ध करवा कर महत्वपूर्ण स्थानों पर स्थापित की गई. इनमें जनसाधारण के अतिरिक्त राज्य कर्मचारियों को भी निर्देश दिए गए. अशोक ने अपने शासन के 14 वर्ष में धम्म महामात्रो को नियुक्त किया. इनका कार्य समाज के सभी वर्गों और संप्रदायों के बीच, देश, सीमांत और विदेश में प्रजा के कल्याण तथा सुख एवं धम्म की अभिवृद्धि करना था. इसके अतिरिक्त ये दानशीलता बढ़ाने, अपराधियों का सजा कम करवाने और लोगों की अन्याय से रक्षा करने का भी कार्य करते थे.

अशोक ने अपने व्यक्तिगत कार्यों से भी धर्म का प्रचार किया उसने जनता के सामने एक ऐसा आदर्श प्रस्तुत किया जिससे प्रभावित होकर सभी धर्म अनुशासित व्यवहार कर सकें. उसने अहिंसा की नीति का पालन करते हुए युद्ध बंद करवा दिया. उसने स्वयं मांस मदिरा त्याग दी.

प्रथम शिलालेख के अनुसार यज्ञ के लिए पशुओं का वध बंद करवा दिया गया. संभवत यह निषेधाज्ञा राजमहल या पाटलिपुत्र नगर तक ही सीमित थी. अशोक ने हिंसा पूर्ण सामाजिक उत्सवों पर भी प्रतिबंध लगा दिया. इसकी जगह धर्म सभाओं की व्यवस्था की गई जिसमें विमानदर्शन, हस्तीदर्शन, अग्निस्कंध इत्यादि स्वर्ग की झांकियां प्रस्तुत की जाती थी. इससे भी धर्म के प्रति लोगों का अनुराग बढ़ा.

आखेट बंद करवा कर अशोक ने धर्म यात्रा प्रारंभ की. उसने स्वयं बोधगया, लुंबिनी, निगली सागर इत्यादि की यात्राएं की. इन कार्यों से जहां एक तरफ धर्म का प्रचार हुआ वहीं प्रशासन का स्थानीय अधिकारियों पर नियंत्रण भी स्थापित हुआ. इस यात्रा के अवसर पर अशोक दान भी देता था जिससे इसके प्रसार में वृद्धि हुई.

अशोक ने धर्म प्रचार के लिए भारत के विभिन्न भागों एवं विदेशों में प्रचार मिशन भी भेजें. चोल, पांडेय, सतियपुत्र, केरलपुत्र, कश्मीर एवं गंधार, महिषमंडल, अपरान्तक, महाराष्ट्र, वनवासी के अतिरिक्त प्रचार मिशन पश्चिम के यवन शासकों के पास खेतान (मध्य एशिया) एवं सिंहल द्वीप (श्रीलंका) तथा सुवर्णभूमि (सुमात्रा) भी भेजे गए.

इन सभी मिशनों में सबसे महत्वपूर्ण था अपने पुत्र महेंद्र एवं पुत्री संघमित्रा को श्रीलंका भेजना. बौद्ध साहित्य से ज्ञात होता है कि तृतीय बौद्ध संगति की समाप्ति के पश्चात अशोक विभिन्न क्षेत्रों में धर्म प्रचारक भेजे.